शेफालिका श्रीवास्तव

व्रत के मायने

ई-मेल-shefalika.shrivastava@rediffmail.com

रीता अपने काम में मगन माता के गीत गुनगुना रही थी।

“क्या हुआ आज तो तू बड़ी ख़ुश है !“ मीरा आकर बोली।

रीना बोली, “आज से नवरात्रि है ना, जगह-जगह देवी के पंडाल हैं, रोज बढ़िया प्रसाद मिलता है, पेट की चिंता ख़त्म।“ थोड़ा रुककर बोली, “और... देवी के भजन सुनने को मिलते हैं तो मन भी ख़ुश ।” थोड़ा मुसकुराते हुए बोली, “पति को भी सराब पीने का समय नहीं मिलता, पंडाल में बिजी रहता है, और फिर मेरे से लड़ने का भी समय नहीं मिलता ! तो...वो टेंशन भी खतम।“

मीरा बोली, “ओह,अच्छा।” थोड़ा रुककर फिर बोली, “तो तू पंडाल से प्रसाद, भंडारा का खाना खाकर आ रही है! तू तो नवरात्र में व्रत करती थी ना, व्रत नहीं है तेरा ?“

रीना आक्रोश में बोली, “अरे मेम साब, देवी का व्रत करूँ और पति की मार खाऊँ!“ फिर थोड़ा शांत होकर बोली, “हो गया बस, देख लिया कि ये व्रत-उपवास भी अमीर लोगों के लिए है। इतना महंगा फलाहार ढूँढते फिरो। न मिले तो वो अलग परेशानी!...भूखे भजन न होय गोपाला...! हमें तो इन्हीं दिनों भरपेट खाने को मिलता है । समझो... सालभर व्रत करते हैं, तब ये दिन आते हैं । जय माता दी!”

अब मेमसाब के, व्रत में खाने वाली प्लेट की ओर बढ़ते हुए हाथ रुक गये ।।!

शेफालिका श्रीवास्तव

अनूठा रिश्ता

बातों-बातों में जैसे ही इना को पता चला कि लकी एक हफ़्ते के लिए लंदन घूमने जा रहा है, वो बोल पड़ी—"ओह, तो तुम रक्षाबंधन पर यहाँ नहीं हो!"

"हाँ दीदी। यहाँ विदेश में अपने त्योहार का कुछ पता नहीं चलता, लंदन की बुकिंग करवाते समय रक्षाबंधन की तारीख़ का ध्यान नहीं रहा! अब तो यार, बुकिंग हो चुकी है!" बहुत ही सामान्य तरीक़े से लकी ने जवाब दिया। ऐसा लगा, मानो उसे कोई अफ़सोस नहीं था। बहन को चुप देखकर फिर बोला, "राखी तो जन्माष्टमी तक बाँधते हैं ना। आकर मना लेंगे!"

इना समझ रही थी, लकी को राखी पर साथ न रहने का जरा भी दुख नहीं है। चूँकि वो बहन-भाई के रिश्ते को बहुत ज़्यादा अहमियत देती थी, भाई से भी वही अपेक्षा करती थी। कुछ नहीं बोली, चुप रह गई। सोच रही थी—रक्षाबंधन के दिन भारत में कितना अच्छा लगता है ! भाई-बहन के रिश्ते की अहमियत दर्शाता यह एक अनूठा त्योहार होता है, वो भी यहाँ आने के बाद आधुनिकता की चपेट में आ चुका है। सोचते हुए बोली, "ठीक है भाई, जब तुम चाहो, राखी बाँध दूँगी।" आगे भी मुस्कुराती हुई बोल पड़ी, "वैसे भाई, मेरे जीवन की किताब में, मेरा-तुम्हारा रिश्ता एक ऐसा खूबसूरत अध्याय है जो एक विशेष अर्थ रखता है, जिसे मैं जीवनपर्यन्त लिखती रहूँगी !"

और भाई, बहन को देखते हुए, लंदन की दूसरी बुकिंग ढूँढने लगा !

पहल

अख़बार बेचने वाला सुहेल गणेश उत्सव में प्रसाद लेने पहुँचा। यह देखकर आश्चर्य चकित हो गया कि मंच से, प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण, दुष्प्रभाव व पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित प्रभावी व लंबा भाषण देने वाले सुमित अवस्थी, पॉलिथीन पैकेट्स में प्रसाद वितरित कर रहे हैं ! उसने तुरंत अपने पेपर के बंडल से कुछ अख़बार निकाले और फाड़ लिये।

"सुमित जी, मैं कुछ मदद करूँ?"

"हाँ-हाँ... लो, ये प्रसाद बँटवा दो!" सुहेल के मन में कल ही जागृत हुई पर्यावरण संरक्षण की इच्छा बलवती हो रही थी। वह कुछ पहल करना चाह रहा था। उसने सोचा, जो वह बोल नहीं सकता है, करके दिखा सकता है। साथ खड़ा होकर अख़बार के टुकड़े में रखकर प्रसाद वितरित करने लगा! और बिना कुछ कहे, फाड़े हुये अख़बार के कुछ टुकड़े उसने सुमित जी के सामने भी रख दिये ! अब, प्रसाद अख़बार के टुकड़ों में बँट रहा था।